

## **कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, धनोरा (जिला छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश):**

### **सफलता की एक प्रेरक गाथा**

वनांचल क्षेत्र में स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, धनोरा, छिंदवाड़ा जिले के मुख्यालय से लगभग 70 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस विद्यालय की स्थापना वर्ष 2006 में हुई, जब क्षेत्र में आवागमन के साधनों का अत्यधिक अभाव था। यहाँ के ग्रामीणों को 20 किलोमीटर तक कच्चे मार्ग पर पैदल या ट्रैक्टर से सफर करना पड़ता था।

सर्व शिक्षा अभियान के तहत, जब शासन द्वारा इस क्षेत्र में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान की गई, तब लोगों के लिए यह योजना पूर्णतः अपरिचित थी। तत्कालीन बीआरसी श्री आनंद कुमार जैन एवं जनशिक्षक श्री बसंत कुमार विश्वकर्मा के समर्पित प्रयासों से पात्र बालिकाओं की पहचान की गई। बालिकाओं के माता-पिता को अपनी बेटियों को विद्यालय भेजने के लिए सहमत कराना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य था।

आरंभिक चरण में, विद्यालय में प्रवेश प्राप्त करने वाली बालिकाएँ गरीब और पहाड़ी क्षेत्रों में बसे 40-50 किलोमीटर दूर के परिवारों से थीं। विद्यालय तक उनका पहुँचना अत्यंत कठिन था। साथ ही, भवन की भी उचित व्यवस्था नहीं थी। वार्डन श्रीमती पुष्पा सोनी, सहायक वार्डन श्रीमती शीला लोखंडे और जनशिक्षक के सहयोग से आवासीय सुविधा का प्रबंध किया गया। टूटे-फूटे भवन की मरम्मत कर आवश्यक सुविधाएँ, जैसे बिजली एवं पानी, उपलब्ध कराई गई। अंततः 11 अगस्त 2006 को छात्रावास का संचालन प्रारंभ हुआ, जिसमें प्रथम सत्र में 50 बालिकाओं को प्रवेश दिया गया।

### **विद्यालय की उपलब्धियाँ**

आज विद्यालय ने अपने 18 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिए हैं और अब तक लगभग 1800 बालिकाओं को शिक्षा प्रदान की है। इनमें से कई बालिकाएँ आज आत्मनिर्भर होकर सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रही हैं।

- 7 बालिकाएँ आत्मरक्षा प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं।
- 4 बालिकाएँ नर्सिंग कोर्स कर रही हैं।
- 2 बालिकाएँ महिला एवं बाल विकास विभाग में कार्यरत हैं।
- अन्य बालिकाएँ निजी कंपनियों और विभिन्न प्रांतों में कार्यरत हैं।

### **वर्तमान स्थिति और सुविधाएँ**

वर्तमान में विद्यालय में 100 छात्राएँ अध्ययनरत हैं। बालिकाओं को निम्नलिखित सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं:

- दो जोड़ी नाइट ड्रेस, जूते-मोज़े, स्टेशनरी, स्कूल बैग, गर्म कपड़े एवं नव प्रवेशित बालिकाओं को बिस्तर।
- प्रत्येक माह ₹100 की वृत्तिका राशि।
- नियमित रूप से नाश्ता, चाय, दूध, और पौष्टिक भोजन।
- नियमित स्वास्थ्य परीक्षण।
- व्यक्तिगत उपयोग की सामग्री।

बालिकाएँ पास के विद्यालय में नियमित कक्षाओं में भाग लेती हैं और अतिथि शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में अतिरिक्त अध्ययन करती हैं। कराटे प्रशिक्षिका द्वारा आत्मरक्षा का प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक शिक्षिकाओं द्वारा मेंहदी, रंगोली, सिलाई-कढ़ाई आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

### **एक परिवार की तरह वातावरण**

इस विद्यालय में बालिकाएँ और समस्त कर्मचारी एक परिवार की भाँति साथ रहते हैं। यहाँ की छात्राएँ विद्यालय को अपना घर मानती हैं और अत्यधिक प्रसन्नता से जीवनयापन करती हैं।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, धनोरा, आज शिक्षा और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन चुका है और ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।